Kharif POP: DSR (Buna Dhan)

Download

- Read report on DSR (Buna Dhan)

Read report on DSR (Buna Dhan)

खरीफ पी.ओ.पी.

[redacted]

25 डिसमिल जमीन के लिए

- झारखंड की परिवेश में बुना धान की उपज भी रोपा धान की तरह हो सकती है |
- बुना धान विधि में बीड़ा या नर्सरी तैयार करने की जरूरत नहीं होती है |
- बुना धान की खेती में समय, मजदूरी और पैसा तीनों बचता है |
- बुना धान लाइन से करने पर निकाई भी आसानी से हो जाती है |
- बुना धान की विधि से धान के खेत में रबी फसल (चना, सरसों मसूर, खेसारी इत्यादि) समय पर लगाई जाती है |

जमीन का प्रकार:

2 नंबर टांड या 3 नंबर दोन जमीन बुना धान की खेती के लिए उपयुक्त माना जाता है | जानकारी के साथ किसान, 2 नंबर एवं 1 नंबर दोन जमीन में भी इस विधि से धान लगा सकते है |

बुना विधि से खेती करने का उचित समय:

मई महीने के अंतिम सप्ताह से लेकर जुलाई महीने के दूसरे सप्ताह तक सीधे धान के बीज की बुआई की जा

फोटो : - बीज़ की छँटाई एवं उपचार

सीधे धान की बुनाई के लिए खेत की तैयारी:

जमीन की जुताई के पहले 1000 किलो गोबर खाद प्रति 25 डिसमिल का प्रयोग कर खेत की दो से तीन बार जुताई करें। अंतिम जुताई के समय 40 किलो घनजीवामृत प्रति 25 डिसमिल के दर से पूरे खेत में समान रूप से डाल कर पाटा लगा कर खेत को समतल कर दें। समतल किए खेत में लाइन मार्कर या हल या कुदाल का इस्तेमाल कर 10 इंच (एक बित्ता से थोड़ा अधिक) की दूरी में लाइन बना लें।

फोटो : - बीज गिराने के लिए लाइन बनाना एवं मार्कर का उपयोग

बीज का दर एवं लगाने की विधि:

25 डिसमिल जमीन के लिए 7 से 8 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होगी।

ऊपर बताए गए तरीके से लाइन बना कर हर लाइन में बीज को हथेली और उँगलियों की मदद से बीज को लगातार गिराना चाहिए | अगर 4-4 इंच की दूरी पर बीज़ गिराते हैं तो एक-एक जगह पर 3 से 4 बीज गिराएं। बीज को समान दूरी में एवं लाइन में लगाने से प्रत्येक पौधे को समान रूप से हवा, धूप एवं उर्वरक उपलब्ध होता है,

इसके साथ कोड़ाई करने में भी आसानी होती है। लाइन में बीज़ को गिराने के बाद हल्के पैर से बीजों को मिट्टी से ढँक दें जिससे धान का बीज़ 2 अंगुल नीचे चला जाए |

धान की बीज़ की किस्में

फोटो : - लाइन से धान बीज गिराना और धान का पौधा निकलना /

खाद/उर्वरक का प्रयोग (25 डिसमिल के लिए) :

धान की अच्छी फसल के लिए गोबर खाद एवं घनजीवामृत के अतिरिक्त जीवामृत का भी आवश्यकता है | पहला निकाई–कोड़ाई यानि 15 दिन के बाद 30 लीटर जीवामृत का छिडकाव करना है | इसी तरह दूसरा निकाई–कोड़ाई के बाद 20 लीटर जीवामृत का छिडकाव जरुरत है |

निकाई गुड़ाई में वीडर का उपयोग :

- सीधी धान की बुआई विधि वाले खेत में घास के नियंत्रण हेतु दो बार निकाई-कोड़ाई करना अनिवार्य है। निकाई गुड़ाई हाथ से बहुत कष्टकारी काम है जिसमें अधिक मजदूरों की भी आवश्यकता होती है, इसलिए वीडर का उपयोग उचित एवं मददगार होगा | पहला निकाई-कोड़ाई धान बुनाई से 10-15 दिनों पर तथा दूसरा निकाई-कोड़ाई 25-30 दिनों पर वीडर की मदद से करना चाहिए | पहली निकाई समय से नहीं करने

फोटो : - निकाई के लिए वीडर यंत्र का उपयोग

रोग प्रबंधन:

झुलसा या ब्लास्ट रोग **(Blast)** : यह बीमारी प्रायः गाड़ा निकलने से पहले होती है इसमें पत्तियों पर छोटे-छोटे चौड़े नाव आकार के भूरे धब्बे दिखाई देते हैं। जो धीरे-धीरे पूरे पत्ते पर फैल जाते हैं इनके बीच का भाग राख के रंग का होता है ।		• मठास्त्र या महुआस्त्र या सौठास्त्र का प्रयोग 50 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर 10 दिन के अन्तराल पर 2 बार छिड़काव करें |

धान की भूरी चित्ती रोग **(Brown Spot)** : यह बीमारी फूल निकलने के समय आता है | इसमें		• मठास्त्र या महुआस्त्र या सौठास्त्र का प्रयोग 50 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर 10 दिन के अन्तराल पर

आभासी कंड **(False Smut)** : यह एक फफूँद जनित रोग है । इस रोग के लक्षण पौधों में बालियों के निकलने के बाद ही स्पष्ट होते हैं । दाने पीले से लेकर संतरे के रंग के हो जाते हैं जो बाद में काला रंग में बदल जाते हैं | इस रोग का प्रकोप सितम्बर माह में जब धान में दूध बनने लगता है तब अधिक होता है |		• अथवा जैविक दवाई में – मठास्त्र या महुआस्त्र या सौठास्त्र का प्रयोग 50 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर 10 दिन के अन्तराल पर 2 बार डालें |

कीट प्रबंधन:

[redacted]

तना छेदक किट **(Stem Borer) :** इस कीट की सूँडी (Caterpillar) अवस्था ही		• तना छेदक की रोकथाम के लिए फेरोमोन ट्रेप (Pheromone trap) का प्रयोग 3 से 4 ट्रेप प्रति 25

गंधी बग **(Rice Gundhi Bug)** : वयस्क लम्बा एक पतले और हरे -भूरे रंग का उड़ने वाला कीट होता है। इस कीट की पहचान कीट से आने वाली दुर्गन्ध से भी कर सकते हैं। इसके वयस्क और शिशु कीट दूधिया दानों को चूसकर हानि पहुंचाते हैं, जिससे दानों पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और दाने खोखले रह जाते हैं।		• अग्नेअस्त्र या ब्रम्हास्त्र या हांड़ीकाथ का प्रयोग 30 मिली प्रति लिटर पानी में मिला कर 10 दिन के अन्तराल पर 2 बार डालें |

सिचाई प्रबंधन:

आम तौर पर बुना धान में सिचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। लेकिन सुखा होने की अवस्था में पानी देना चाहिए।

औसत उपज:

औसत उपज (झारखण्ड) : 2.24 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर

औसत उपज (इंडिया) : 2.41 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर

संभावित उपज :

धान की किस्म	अनुमानित उपज (किलो प्रति 25 डिसमिल)
सहभागी (Sahbhagi)	375
IR-64, DRT-1	575
DRR-44	475
MTU-1010	475

विशेष बातें

- अप्रैल से मई महीने में खेत की गरमा जुताई 6 इंच गहराई तक करनी चाहिए |
- खेत को जुताई एक बार उत्तर से दक्षिण और दूसरी बार पूर्व से पश्चिम दिशा में करनी चाहिए | इससे मिट्टी जनित बीमारियों का प्रकोप की संभावना घटती है | इससे मिट्टी हल्की होती है और वर्षा का पानी